(पृष्ठ १९ का शेष...)

उत्तर ह्न भाई ! यही उपाय है। प्रथम तत्त्वार्थसमूह को जानना। राग का क्या स्वरूप है, वस्तु का क्या स्वभाव है, धर्म की दशा हो तो उसका क्या स्वरूप है, विकार होने में निमित्तरूप वस्तु कौन है ? अर्थात् स्ववस्तु क्या है और परवस्तु क्या है ह्न ये सब भगवान कथित मार्ग से भलीभाँति जानना। जानकर फिर 'पर' ऐसे समस्त चेतन-अचेतन का त्याग करना और निज चेतन को ग्रहण करना ह्न ऐसा कहते हैं।

अहा ! भगवान आत्मा स्वयं नित्य चिदानन्दस्वरूप है, उसका भजन करे अर्थात् पर का लक्ष्य छोड़कर स्ववस्तु में एकाकार हो ह्न ऐसा कहते हैं। तब इसको धर्म की शुरुआत होगी। इसप्रकार इस कलश में तो यहाँ तक कहा और फिर 44 वें कलश में कहेंगे कि चेतन-अचेतन इन दो के विकल्प मुनि/धर्मी को नहीं होते। यह विचार तो प्रारम्भ में आता है कि मैं चेतन हूँ और ये रागादि अचेतन है; परन्तु फिर अभ्यास से तो इन दोनों के विकल्प भी छूट जाते हैं।

मुनि को अथवा धर्मी को अंतरंग में धर्मध्यान के अभ्यास से ये दो विकल्प भी नहीं रहते। ●

पाठकों के पत्र

जैनपथप्रदर्शक (अक्टूबर-द्वितीय-०८) एवं वीतराग-विज्ञान (अक्टूबर-०८) में प्रकाशित समाचार को पढकर **रोहतक (हरियाणा) से डॉ. एस. के. जैन** लिखते हैं ह्न

राष्ट्रसंत सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज द्वारा आप (डॉ.भारिल्ल) को '**समयसार का शिखरपुरुष**' घोषित करने के अवसर पर आपको मेरी तरफ से व हमारी समयसार की दोनों कक्षाओं (पुरुष वर्ग और स्त्री समाज) की तरफ से ढेर सारी बारम्बार बधाई हो, साथ में दीपावली की भी शुभकामनायें स्वीकार करें। समयसार की नई विवेचन शैली ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका की सरलता व स्पष्टता का कोई सानी ही नहीं है। हम हर रोज इसका स्वाध्याय कर रहे हैं, इसमें जम रहे हैं ... रम रहे हैं।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 305 अंक : 5

म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी

म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी।। टेक ।।

जागृत दशा भई अब मेरी, सुप्त दशा विघटी।
जग रचना दीसत अब मोकौं, जैसी रहट घटी।।
म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी।।1 ।।

विभ्रम-तिमिर हरन निज दृग की, जैसी अंजन वटी।
तातैं स्वानुभूति प्रापति तैं, पर-परिणति सब हटी।।
म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी।।2 ।।

ताके बिन जो अवगम चाहै, सो तो शठ कपटी।
तातैं भागचंद निशिवासर, इक ताहि को रटी।।
म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी।।3 ।।

ह्न कविवर पण्डित भागचंदजी

नियमसार प्रवचन

परम तत्त्व को ही भजो

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 29 वीं गाथा की टीका में समागत 43वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है ह्न

इति जिनपतिमार्गाद् बुद्धतत्त्वार्थजात:
त्यजतु परमशेषं चेतनाचेतनं च।
भजतु परमतत्त्वं चिच्चमत्कारमात्रं
परविरहितमंतर्निर्विकल्पे समाधौ ।।

इसप्रकार जिनपति के मार्गद्वारा तत्त्वार्थसमूह को जानकर समस्त पर चेतन और अचेतन को त्यागो। अंतरंग में निर्विकल्प समाधि में परविरहित (पर से रहित) चित्चमत्कारमात्र परमतत्त्व को भजो।

(गतांक से आगे...)

अहा ! त्याग की व्याख्या तो बहुत सूक्ष्म है; लेकिन अज्ञानी बाहर का त्याग करके, स्त्री-पुत्र-परिवार को छोड़ के बैठ जाता है और मान लेता है कि हम त्यागी हो गये; परन्तु यह कोई त्याग नहीं है।

देखो यहाँ क्या कहते हैं कि अन्तर में इस आत्मा के सिवा अन्य सभी आत्मायें तुझसे भिन्न है। यहाँ तक कि निगोद से लेकर अरहंत-सिद्ध परमात्मा आदि पंचपरमेष्ठी भी तेरे नहीं हैं अर्थात् वे तेरे आधार से नहीं रह रहे हैं, वे तो स्वयं से रहे हुये हैं, इसलिये तुझको उनसे कुछ लाभ नहीं है।

देखो, इसमें किसको शेष रखा ? समस्त चेतन तथा अचेतन को त्यागो ह्न ऐसा कहा है न ! तो इसमें कौन शेष रह गया ? सभी आ गये, सारा जगत आ गया। इसलिये 'पर' ऐसे समस्त चेतन-अचेतन को त्यागो अर्थात् उन सब पदार्थों का लक्ष्य छोड़ दो; क्योंकि वे तुम्हारे नहीं हैं, तुम में नही हैं और तुम उनमें नहीं हो।

तो फिर किसका लक्ष्य करना यह कहते हैं ह्न

अंतरंग में निर्विकल्प समाधि में पर से रहित चिच्चमत्कारमात्र परमतत्त्व को भजो।

अंतरंग में माने वस्तु में। निर्विकल्प समाधि में माने भेदरहित अभेद अतीन्द्रिय शांति में। पर विरहित माने विकल्पादि पर से रहित ह्न ऐसे चिच्चमत्कारमात्र परमतत्त्व को भजो ह्न ऐसा कहते हैं। सारभूत बात है भाई ! अभी तो यह सब समझना ही कठिन पड़ता है।

देखो, राग के काल में तो पर की दृष्टि थी; परन्तु अब निर्विकल्प समाधि में राग-रहित अन्तर्मुख होकर पर अर्थात् राग और विकल्प से रहित चिच्चमत्कारमात्र निजभगवान आत्मा को भजो, उसमें अंतर एकाग्र होओ। यही धर्म और मुक्ति का मार्ग है। भाई ! वजनदार बात है। देखो, ये तो आत्मा को भजो ह्न ऐसा कहते हैं।

यह गाथा यहाँ (सोनगढ़) की नहीं है, यह तो दो हजार वर्ष प्राचीन हुये श्री कुन्दकुन्ददेव की है और यही बात मुनि भगवंत अनादिकाल से कहते आये हैं।

अहा ! यह नियमसार शास्त्र है। इसकी रचना में श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव निमित्त थे। वे कहते हैं ह्न भगवान तुझे अपना कल्याण करना हो, हित करना हो, धर्म करना हो तो रागादि परिणाम आदि जो भी अचेतन हैं, उनका त्याग कर ! उनकी दृष्टि छोड़ !

अरे ! भगवान की भक्ति का भाव हो तो वह भी राग होने से अचेतन ही है; इसलिये उसका भी लक्ष्य छोड़ दे तथा शरीर के परमाणु अनुकूल रहें तो मेरा धर्म टिका रह सकता है ह्न यह भी लक्ष्य में से निकाल दे और अंतरंग में निर्विकल्प समाधि में अर्थात् अंतरंग में राग रहित शांति और श्रद्धा की दशा में, परविरहित अर्थात् रागरहित अपने चैतन्यचमत्कार तत्त्व को भज !

अहा ! भगवान आत्मा तो चिच्चमत्कारमात्र अर्थात् ज्ञानमात्र चमत्कारस्वरूप है। ये दया, दान अथवा व्रत के विकल्प आदि तेरी वस्तु में नहीं है। इसलिये रागरहित होकर चिच्चमत्कारमात्र निजपरमतत्त्व को भज !

प्रश्न ह्न सीधे यही करना है या इसके पहले भी कुछ करना पड़ेगा ?

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

छहढाला प्रवचन

जीव की चाल अजीव से न्यारी

पुद्गल-नभ-धर्म-अधर्म-काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल।
ताको न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान ।।३ ।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

जिस भूल के कारण जीव संसार में दुःखी हो रहा है, उस भूल का स्वरूप समझाकर, उससे छुड़ाने के लिये यह उपदेश दिया है।

उपयोगस्वरूप जीव है, इसके सिवाय पुद्गल, आकाश, धर्म, अधर्म, काल - ये पाँच अजीव है; जीव की चाल उन अजीवों से न्यारी है। अजीव द्रव्यों से जीव द्रव्य अलग, जीव के गुण अलग और जीव की परिणति अलग ह्न ऐसे सर्व प्रकार से भिन्नता है। पाँच अजीव द्रव्यों में उपयोग नहीं है, आत्मा ही उपयोगरूप है। जैसे शक्कर मीठी है, वैसे जीव उपयोगमय है। उसकी चाल, उसकी दशा सबसे न्यारी है, उसका स्वभाव न्यारा है ह्न जो अन्य किसी में नहीं है। ऐसे जीव को न पहचानकर अज्ञानी देह को ही जीव मान लेते हैं, सो मिथ्यात्व है।

उपयोग में निजपिछान करनी चाहिए, इसके बदले इसने देह में निजपिछान की। इसने अपने को उपयोगरूप न मानकर देहरूप माना।

मैं बालक, मैं जवान, मैं बुड्ढा, मैं काला, मैं सफेद, मैं खाता हूँ, मैं बोलता हूँ - इसप्रकार देह को ही जीव मान लिया; परन्तु उससे अत्यन्त भिन्न अपनी उपयोग-चाल को इसने नहीं जाना। जीव की चाल तो चेतनरूप है। चेतनरूप चाल अर्थात् चेतनरूप क्रिया जगत् के अन्य किसी भी पदार्थ में नहीं हैं। चाल माने स्वभाव, परिणति, क्रिया। जीव और अजीव दोनों की चाल, दोनों का स्वभाव, दोनों की क्रिया अत्यन्त न्यारी है।

ऐसे भेदज्ञानरूप वीतराग-विज्ञान के बिना मिथ्यात्ववश जीव संसार में परिभ्रमण करता है; सो यह जीव की भूल है।

जीव अपनी भूल को न देखकर दोष का भार कर्मों के ऊपर डालने की चेष्टा

करता है। परन्तु भाई ! उस जड़ कर्म को तो कुछ जानकारी ही नहीं कि 'हम जड़ हैं और जीव को हम दुःख दें !' उस कर्म को जाननेवाला तो यह जीव है, उसने भूल से ऐसा मान लिया कि यह कर्म मुझे हैरान कर रहे हैं।

अज्ञानी जीव भ्रान्ति से ऐसा मान रहा है कि यह शरीर ही मैं हूँ। भाई ! तुम तो चेतन हो और वह जड़ है ह्न इन दोनों का मिलान कैसे हो सकता है? दोनों जुदे ही हैं। अरे ! अपने भाव में मिथ्यात्व क्या है ह्न इसकी भी इस जीव को खबर नहीं है। अरिहंत भगवान का नाम ले लिया और कुदेव को न माना - इतने से मिथ्यात्व छूट नहीं जाता। अरिहन्त का नाम तो लेते हो; परन्तु अरिहन्तदेव के कहे हुए तत्त्वों को पहचानते नहीं हो; तो तुम्हारा मिथ्यात्व कैसे छूटेगा? अरिहन्तदेव की कही हुई जीव-अजीव की भिन्नता को जाने बिना मिथ्यात्व मिटेगा नहीं और अरिहन्तदेव की भी सच्ची पहचान नहीं होगी। जो अरिहन्तदेव के सच्चे स्वरूप को पहचाने, उसके मोह का नाश होकर सम्यक्त्व होता है।

मिथ्यात्व अर्थात् तत्त्व की विपरीत (उल्टी) मान्यता। वह दुःखरूप है और संसार का कारण है; अतः उसे छोड़ने के लिये उसकी पहचान कराते हैं। मिथ्यादृष्टि को शरीर में ही 'अहम्' है; उससे भिन्न अपनी चैतन्यजाति को वह नहीं देखता। जीव और अजीव के द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव सब भिन्न-भिन्न हैं, ऐसी भिन्नता का ज्ञान करने से मिथ्यात्व मिटता है और चार गति के भवभ्रमण का दुःख छूटता है।

उपयोगस्वरूप चिन्मूर्ति जीव के अतिरिक्त पाँच द्रव्य अजीव हैं ह्न

(१) पुद्गल ह्न शरीर, भाषा ये सब पुद्गल की रचनायें हैं; वे मूर्त हैं, वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श उनका स्वभाव है।

(२) धर्मास्तिकाय नामक एक अरूपी जड़ द्रव्य सारे लोक में प्रसर रहा है; मछली को पानी की तरह यह द्रव्य जीव-पुद्गल के गमन में निमित्त है।

(३) अधर्मास्तिकाय नामक एक अरूपी जड़ द्रव्य सारे लोक में फैल रहा है; पथिक को वृक्ष की छाया की तरह यह द्रव्य जीव-पुद्गलों के स्थिर होने में निमित्त है।

(४) नभ अर्थात् आकाश नामक एक अरूपी जड़ द्रव्य सर्वव्यापी है, जो सर्व पदार्थों के रहने में निमित्त है। आंखों से जो ऊपर नीला आकाश (बादल) दिख रहा

है, वह अमूर्त आकाश द्रव्य नहीं है, वह तो मूर्त पुद्गल स्कंधों की रचना है। अरूपी आकाश आँख से नहीं दिखता। वह तो नीचे-ऊपर सभी दिशाओं में सर्वत्र है।

(५) काल नामक असंख्य अरूपी जड़ द्रव्य लोक में सर्वत्र स्थित है; कुम्हार के चाक की धुरी की तरह पदार्थों के परिणमन में वे निमित्त हैं।

'जीव के अतिरिक्त ये पाँचों द्रव्य अचेतन हैं', उनमें 'उपयोग' नहीं है; उपयोग के कारण ही जीव की उनसे महानता है, जीव की चाल उन सबसे न्यारी है। जीव में ही स्व-पर को जानने का स्वभाव है, अन्य किसी में नहीं।

अहो ! जीव व अजीव की कितनी भिन्नता है, तो भी जीव उसको न जानकर विपरीत मानता है। शरीर या भाषा मैं नहीं, मैं तो ज्ञान हूँ; शरीर मैं नहीं। मैं तो शरीर को जाननेवाला हूँ - इसप्रकार अपने को ज्ञानस्वभावरूप पहचानने से मिथ्यात्व मिट जाता है।

जीवादि तत्त्वों के स्वरूप को विपरीत मानकर मिथ्यात्व के सेवन से जीव दुःख को ही उत्पन्न करता है; देह में आत्मबुद्धि कर-करके वह दुःखी होता है। जैसे दर्पण में दिखने वाले प्रतिबिम्ब को ही कोई मूर्ख अपना रूप समझ ले और फिर उस प्रतिबिम्ब का नाश होने पर अपना ही नाश मानकर दुःखी होवे, वैसे अज्ञानी बड़ा मूर्ख अपने को देहरूप ही मान रहा है 'मैं मनुष्य,' 'मैं पुरुष' ह्न ऐसा मानकर शरीर की चेष्टाओं को ही अपनी मान रहा है - यह जीवतत्त्व के सम्बन्ध में बड़ी भूल है। जाननेवाला उपयोगस्वभावी आत्मा है, उसकी चाल जड़ देह से जुदी है, उसको जुदा न जानकर एक-दूसरे में मिलाकर एकरूप मानता है, जड़कर्म का बांधनेवाला आत्मा, जड़शरीर को चलानेवाला आत्मा, इन्द्रियवाला आत्मा - इसप्रकार जड़रूप से आत्मा को पहचानता है, यह पहचान सच्ची नहीं है।

जीव को उपयोगस्वरूप से पहचानना ही सच्ची पहचान है और जब जीव की ऐसी पहचान करे तब ही अरिहन्त-सिद्ध-मुनि वगैरह की सच्ची पहचान होती है।

क्या जीव शरीर को चलाता है? क्या जीव बोलता है? ये बातें संभव नहीं है; क्योंकि ये तो सब जड़ की चाल है; आत्मा की चाल तो जाननेरूप/ज्ञानरूप है।

पण्डित बनारसीदासजी ने कहा है कि ह्न

तनता, मनता, वचनता, जड़ता, जड़संमेल।
गुरुता, लघुता, गमनता ये अजीव के खेल॥

अर्थात् तन की, मन की, वचन की सब क्रियाएँ अजीव का खेल हैं; उस अजीव से भिन्न जीव का विलास कैसा है ? यह भी कहते हैं ह्न

समता, रमता, ऊर्धता, ज्ञायकता, सुखभास।
वेदकता, चैतन्यता, ये सब जीवविलास॥

हे भाई ! देखो !! ये अजीव से भिन्न तुम्हारे आत्मा का विलास ! जीव उपयोगमय है, सुखमय है, इसकी तो पिछान नहीं करते और जड़ देह से ही अपनी पिछान करते हो अर्थात् देह ही मैं हूँ ह्न ऐसी मिथ्याबुद्धि करके देह को ही सम्हालने की चेष्टा करते हो; किन्तु भाई ! उस शरीर में तो जड़ का अधिकार है, तुम्हारा नहीं। तुम्हारा अधिकार, तुम्हारा विलास, तुम्हारा आनन्द तुम्हारे उपयोग में है। उस उपयोग की संभाल करो ! तुम्हारा अस्तित्व उपयोग में है, देह में नहीं; यदि देह नहीं होगी तो भी उसके बिना तुम जीवित रहोगे; किन्तु उपयोग के बिना एक क्षण भी जी नहीं सकोगे।

जैसे सिद्ध भगवन्त देह के बिना अपने उपयोग से ही शाश्वत जी रहे हैं; वैसा ही तुम्हारा उपयोग-जीवन है। उपयोग के बिना जीव का जीवन या अस्तित्व नहीं हो सकता। उपयोग-स्वभाव में अपना अस्तित्व होने पर भी अज्ञानी जीव जड़ में अपना अस्तित्व मानते हैं और अपने 'उपयोग-जीवन' को भूल जाते हैं ह्न ऐसी महान भूल के होने के कारण ही वे निरन्तर महान् दुःख को भोगते हैं।

अब उस भूल को दूर कर दुःख से छूटने के लिये भेदज्ञान का यह उपदेश है। मुमुक्षु को यह भेदज्ञान बार-बार घोलन करने योग्य है।

भाई ! जीव और पुद्गल दोनों की चाल एक-दूसरे से भिन्न है; आत्मा कभी अपनी उपयोग-चाल को छोड़कर पुद्गल की चाल में नहीं जाता... पुद्गल में नहीं परिणमता। जीव और अजीव दोनों की परिणति अपने-अपने में भिन्न-भिन्न है; अपनी परिणति के प्रवाह को छोड़कर दूसरे की परिणति में कोई नहीं जाता।

मैं देह से भिन्न ज्ञानानन्दस्वरूप हूँ - ऐसे अनुभव के बिना देहबुद्धि मिटेगी नहीं।

देह आत्मा है ह्न ऐसा भले सीधा न कहे, देह व आत्मा भिन्न है ह्न ऐसा शास्त्र से सुनकर कहे; परन्तु जिसके अन्तर में ऐसी बुद्धि है कि - देह का कार्य मैं करूँ, मेरे अस्तित्व के कारण से देह टिक रहा है या देह की क्रिया मुझे धर्म में सहायता करती है, उसके देह के साथ एकत्व की कुबुद्धि विद्यमान ही है; वह देह में ही आत्मा का अस्तित्व मान रहा है। ऐसे ही लोगों के लिये कहा है 'करे देह में निजपिछान'। उनको देह से भिन्न अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व दिखता ही नहीं है।

मैं इन्द्रियों से ज्ञान करनेवाला हूँ ह्न ऐसा माननेवाले ने जड़-इन्द्रियों को ही आत्मा मान रखा है, इन्द्रियों से भिन्न उपयोगस्वरूप आत्मा उसने नहीं जाना। ज्ञान का व इन्द्रियों का एक-दूसरे से कोई संबंध नहीं है; एक चेतन है, दूसरा जड़ है। दोनों की चाल न्यारी है। दोनों का स्वभाव न्यारा है। इन्द्रियों से ज्ञान माननेवालों ने अपना अस्तित्व इन्द्रियों में माना है।

जबतक देह में एकत्वबुद्धि रहे और उससे अपनी भिन्नता न जाने तबतक जीव को सामायिक आदि कोई धर्म नहीं होता। जहाँ मिथ्यात्व है, वहाँ सामायिक-प्रतिक्रमणादि कैसा ? शरीर से स्थिर बैठने की क्रिया मैंने की अथवा दो घड़ी तक शरीर बैठा रहा ह्न इससे मुझे धर्म हो गया - ऐसा माननेवाले ने आत्मा को देह से भिन्न नहीं माना; उसने 'कायोत्सर्ग' (काया का ममत्व-त्याग) नहीं किया; अपितु 'काया की पकड़' की है, ममता की है। हे भाई ! देह का काम तुम्हारा नहीं है, अज्ञानी ने भी देह का काम कभी नहीं किया; मात्र झूठ मान लिया है। उसकी यह मिथ्या मान्यता ही घोर दुःख का मूल है। मिथ्यात्व बड़ा पाप है, उस पाप का त्याग किये बिना अव्रत कषायादि का भी त्याग नहीं हो सकता।

इसप्रकार जिसको देह में आत्मबुद्धि है और ज्ञान-दर्शनस्वभावी आत्मा को जो नहीं जानता वह जीव मिथ्यात्व के कारण से जन्म-मरण के बहुत दुःखों को भोगता है ह्न 'भ्रमत भरत दुःख जन्म-मरण'। मिथ्यात्व के रहते हुए चाहे जो करो; किन्तु दुःख मिटेगा नहीं और सुख होगा नहीं; अतः मिथ्यात्व को महा दुःखदायक जानकर तुरत छोड़ दो और आत्मा की पहचान करो। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मा का स्वभाव ज्ञान है तो राग कैसे होता है ?

उत्तर : अपने स्वभाव को भूलकर पर को अपना मानता है, इसलिये पर में राग करता है। निमित्ताधीन बुद्धि होने से, रागादि में एकत्वबुद्धि होने से, पर्यायबुद्धि होने से राग होता है। आत्मा के द्रव्य-गुण में राग करने की शक्ति नहीं है, किन्तु पर्याय में विकार होने की योग्यता से राग होता है।

प्रश्न : आत्मा में नित्यस्वभाव और अनित्यस्वभाव दोनों एक साथ हैं, उनमें से अनित्यस्वभाव का अर्थ क्या है ? क्या विकारीभाव भी आत्मा का अनित्य स्वभाव है ?

उत्तर : आत्मा कायम रहकर पलटता रहता है। आत्मा की विकारी दशा संसार और निर्मल दशा मोक्ष है। शरीर तो संयोगी है, वह तेरा स्वभाव नहीं और क्षणिक विकार भी तेरा स्वभाव नहीं; त्रिकाली स्वभाव का वेदन हो, वह तेरा स्वभाव है। आत्मा में अनित्यस्वभाव तो कायम रहता है, परन्तु विकारी पर्याय सदा नहीं रहती; अत: वह वास्तव में आत्मा का अनित्यस्वभाव नहीं है। क्षण-क्षण में जो जानने की पर्याय हुआ करती है, वही आत्मा का अनित्यस्वभाव है। नई-नई ज्ञान की पर्याय सदा होती ही रहती है, वही आत्मा का अनित्यस्वभाव है।

प्रश्न : इन्द्रियों द्वारा जाना जाय, वह आत्मा अर्थात् आत्मा इन्द्रियों से जाना जाता है ह्न ऐसा मानें तो क्या आपत्ति है ?

उत्तर : इन्द्रियों से जाना जाये, वह आत्मा ह्न ऐसा नहीं है; क्योंकि आत्मा तो सर्वज्ञस्वभावी है। इन्द्रियों से आत्मा जाना जाता है ह्न ऐसा माना जाये तो इसमें आत्मा के सर्वज्ञस्वभाव का अपवाद होता है तथा सर्वज्ञ का भी अपवाद होता है। जानने का स्वभाव तो चेतन आत्मा का ही है, अचेतन इन्द्रियों का नहीं। सर्वज्ञ का ज्ञान अतीन्द्रिय ही है, उन्हें इन्द्रियों का अवलम्बन रंचमात्र भी नहीं है। यदि ऐसा माना जाये कि आत्मा को जानने की सामर्थ्य इन्द्रियों की है, तो इसमें आत्मा के सर्वज्ञस्वभाव का स्पष्ट अनादर हो जाता है और यही सबसे बड़ी आपत्ति है।

प्रश्न : आत्मा और ज्ञान अभेद हैं तो उनमें लक्ष्य और लक्षण का भेद क्यों किया ?

उत्तर : प्रसिद्धत्व और प्रसाध्यमानत्व के कारण लक्षण और लक्ष्य का विभाग करने में आया है। ज्ञान स्वयंप्रसिद्ध है और उस ज्ञान द्वारा आत्मा की प्रसिद्धि की गई है। लोग ज्ञानमात्र को तो स्वसंवेदन से जानते हैं। पेट दुखता है, माथा दर्द करता है ह्न ऐसा किसने जाना ? ज्ञान ने जाना। इसप्रकार ज्ञान तो प्रसिद्ध है; परन्तु अज्ञानी उस ज्ञान द्वारा अकेले पर की प्रसिद्धि करता है, इसलिये उस ज्ञान को स्वसन्मुख करके आत्मा की प्रसिद्धि करने के लिये आत्मा और ज्ञान का लक्ष्य-लक्षण भेद करके समझाया गया है। प्रसिद्ध ज्ञान द्वारा अप्रसिद्ध आत्मा को प्रसिद्ध किया गया है।

प्रश्न : आत्मद्रव्य समस्त पर्यायों में व्यापक है ह्न ऐसा कहा तो क्या विकारी पर्यायों में भी आत्मा व्यापक है ?

उत्तर : हाँ, विकारी पर्याय में भी उस एकसमय के लिये आत्मा व्यापक है; परन्तु ऐसा जिसने निर्णय किया, उसकी अपनी पर्याय में अकेला विकारभाव ही नहीं होता, परन्तु साधकभाव भी होता है; क्योंकि विकारभाव कर्म के कारण नहीं होता अर्थात् उसमें कर्म व्यापक नहीं, उसमें भी आत्मद्रव्य ही व्यापक है ह्न इसप्रकार जिसने निश्चय किया, उसके विकार के समय भी द्रव्य की प्रतीति हटी नहीं है। अर्थात् पर्याय में द्रव्य व्यापक है ह्न ऐसा निश्चय करनेवाले को अकेले विकार में ही व्यापकपना नहीं होता; किन्तु सम्यक्त्वादि निर्मल पर्यायों में व्यापकपना होता है।

प्रश्न : केवलज्ञान की शक्ति और केवलज्ञान प्रगट होने का धर्म ह्न इन दोनों में क्या अंतर है ?

उत्तर : जिस जीव में केवलज्ञान प्रगट होनेवाला है, उस जीव में केवलज्ञान प्रगट होने का धर्म सदैव है। उपर्युक्त शक्ति और धर्म दोनों भिन्न-भिन्न चीजें हैं। केवलज्ञान की शक्ति तो अभव्यजीव में भी है, परन्तु केवलज्ञान प्रगट होने का धर्म उसमें नहीं है। अभव्य में केवलज्ञान की शक्तिरूप स्वभाव है, किन्तु उसमें केवलज्ञान पर्याय कभी प्रगट होनेवाली नहीं है ह्न ऐसा भी उसका एक स्वभाव है।

प्रश्न : यदि देहदेवल में भगवान आत्मा सर्वकाल प्रत्यक्ष है, तो फिर इस समय क्यों नहीं दिखता ?

उत्तर : यह शक्ति की अपेक्षा प्रत्यक्ष है। जिसकी दृष्टि इसके ऊपर जाती है, उसको प्रत्यक्ष है, तीनों कालों में निर्मल है, तीनों कालों में प्रत्यक्ष है। इसके स्वरूप में दया-दान आदि का विकल्प नहीं होता। जो प्रत्यक्ष करना चाहता है, उसको प्रत्यक्ष ही है। अपने वर्तमान ज्ञान के अंश को त्रिकाली की ओर मोड़ने से प्रत्यक्ष है।

समाचार दर्शन ह्न

इन्दौर की धरातल पर विश्व की अद्वितीय रचना ह्न

ढाई द्वीप जिनायतन का शिलान्यास

इन्दौर : यहाँ रविवार 2 नवम्बर, 08 को गोम्मटगिरि की तलहटी में स्थित श्री कुन्दकुन्द नगर (नैनोद ग्राम) में ढाई द्वीप जिनायतन का भव्य शिलान्यास ऐतिहासिकरूप से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: 6:30 बजे जैन मंदिर गाँधीनगर से जिनेन्द्र शोभायात्रा स्वर्णरथ, पालकी एवं लवाजमें के साथ कार्यक्रम स्थल कुन्दकुन्दनगर पहुँची, जहाँ मुम्बई निवासी श्री कैलाशजी छाबड़ा के करकमलों से ध्वजारोहण किया गया।

जिनेन्द्र अभिषेक एवं सामूहिक पूजन के उपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के मार्मिक व्याख्यान हुये। डॉ. भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि यह तीर्थधाम समग्र जैन समाज की एकता को कायम रखने हेतु एक सशक्त केन्द्र का कार्य करेगा। साथ ही उन्होंने पूज्य गुरुदेवश्री को याद करते हुये कहा कि गुरुदेव ने हम सभी को भगवान देखा और भगवान बनने का मार्ग बताया है। उसी मार्ग का प्रचार-प्रसार करने के लिये इस ढाईद्वीप जिनायतन की रचना की जा रही है। इस संकल्प का शिलालेख भी यहाँ रीति-नीति के रूप में लगाया है।

डॉ. भारिल्ल का यह प्रवचन इतना मार्मिक था कि उसीसमय एक भाई ने इस प्रवचन की पाँच हजार सी.डी. वितरित करने की घोषणा की।

प्रवचन के उपरान्त राजकोट से पधारे 40 बाल कलाकारों द्वारा पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे के निर्देशन में अहो ढाई द्वीप नामक सुन्दर नाटिका का भव्य मंचन किया गया।

इसके पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सभा का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर के उपकुलपति श्री एन. के. जैन ने अपनी भावना व्यक्त की कि जैन भूगोल के हिसाब से बनाया जा रहा यह जिनायतन सांस्कृतिक समन्वय का प्रमुख केन्द्र तो बनेगा ही, साथ ही जैन भूगोल पर शोधकर्त्ताओं के लिये विशेष उपयोगी होगा। यहाँ जैन भूगोल संबंधी सभी प्रकार की सामग्री आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उपलब्ध होना चाहिये ह्न ऐसी मेरी भावना है।

विशेष अतिथि के रूप में दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर. के. जैन मुम्बई, दिगम्बर जैन समाज इन्दौर के संरक्षक पद्म श्री बाबूलालजी पाटोदी, श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई, श्री भरत मोदी इन्दौर, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट आदि के साथ समस्त विद्वत्गण मंचासीन थे। सभा को संबोधित करते हुये पद्मश्री बाबूलालजी पाटोदी ने कहा कि यह ढाई-द्वीप की रचना इन्दौर शहर की आन-बान-शान के रूप में विकसित होगी। इससे न केवल गोम्मटगिरी क्षेत्र को बल मिलेगा; अपितु समस्त दिगम्बर जैन समाज में एकता स्थापित होगी।

उन्होंने डॉ. भारिल्ल द्वारा प्रदर्शित की गई एकता की भावना की भूरि-भूरि सराहना की तथा कहा कि जिन्हें आचार्यश्री विद्यानन्दजी समयसारका शिखर पुरुष कहते हों, उनकी मैं क्या प्रशंसा करुँ।

इस प्रसंग पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर ने अपने मधुर स्वर में गुरुदेवश्री के जीवन एवं उपकार पर सुन्दर गीत प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर समस्त सभा भाव-विभोर हो गई।

सभा के उपरान्त ढाई द्वीप जिनायतन की भूमि का शिलान्यास श्रीमती शोभाबेन रसिकभाई माणिकचंद धारीवाल परिवार पुणे की ओर से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से किया गया। साथ ही स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री कविनभाई मंजुलाबेन पारिख मुम्बई परिवार द्वारा हुआ।

साधर्मियों ने स्वर्ण एवं रजत की प्रतीक स्वरूप ईंटें शिलान्यास में विराजमान की। विशेषता यह रही कि श्री सम्मेद शिखर, श्री गिरनार, कुण्डलपुर, सिद्धवरकूट एवं सोनगढ़ तीर्थ क्षेत्र से लाई गई पवित्र मिट्टी हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री विनयजी झेलावत परिवार एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा कलशों के माध्यम से ले जाकर शिलान्यास स्थल पर डाली गई।

शिलान्यास संबंधी सभी विधि पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने सम्पन्न कराई।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन समाज शासन प्रभावना के ट्रस्टी श्री मुकेश जैन ने ढाई द्वीप जिनायतन परिसर की जानकारी देते हुये बताया कि परिसर में प्रवेश करते ही गुरुदेवश्री के जीवन चरित्र पर एक एनिमेशन फिल्म दिखाई जावेगी। साथ ही पुष्पक विमान में बैठकर गुरुदेवश्री के जीवन संबंधी 14 सजीव झांकियाँ दिखाने की योजना है। **परिसर में 19 फीट ऊँचा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का स्टेच्यू लगाया जावेगा।**

इस प्रसंग पर ढाईद्वीप जिनायतन हेतु भूमि देनेवाले स्व.संतोष बेन धर्मपत्नी डॉ. राजेश जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख डॉ. राजेश जैन का सम्मान शासन प्रभावना ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री प्रवीणभाई बोहरा मुम्बई ने किया।

आयोजन के लिये श्री दिगम्बर जैन मारवाड़ी मंदिर शक्कर बाजार, काँच मंदिर, इतवारिया बाजार द्वारा संपूर्ण लवाजमा उपलब्ध कराया गया। संपूर्ण कार्यक्रम हेतु श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र गोम्मटगिरी का अविस्मरणीय सहयोग रहा।

सभी कार्यक्रम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन एवं संचालन में सम्पन्न हुये।

समारोह में खंडवा, उज्जैन, रतलाम, देवलाली, भिण्ड, राजकोट, गुजरात, हिंगोली आदि क्षेत्रों से बस लेकर हजारों लोग पधारे।

अन्त में शासन प्रभावना ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री भरतभाई शाह ने स्थानीय विद्वान श्री कान्तीकुमारजी पाटनी, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल आदि अनेक विद्वानों सहित सहयोगी एवं कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सेठी, मनोज पाटनी, राजेन्द्र पहाड़िया आदि का आभार प्रदर्शन किया।

संपूर्ण कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार श्री कल्पेशकुमार जैन पत्रकार द्वारा किये जाने पर शासन प्रभावना ट्रस्ट ने उन्हें सम्मानित किया।

मंगलायतन में शिविर सम्पन्न

मंगलायतन (अलीगढ़) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक 24 से 28 अक्टूबर तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन और श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन ट्रस्ट अलीगढ़ के सहयोग से आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

दिनांक 24 अक्टूबर को शिविर का उद्घाटन डॉ. पी. के. जैन रुड़की द्वारा श्री बड़जात्याजी के निर्देशन में किया गया। ध्वजारोहण श्री निहालजी जैन जयपुर के करकमलों से हुआ। शिविर में पण्डित विमलदादाजी झांझरी, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित बाबूभाईजी फतेहपुर, पण्डित अरहंतजी झांझरी एवं तीर्थधाम मंगलायतन के विद्वानों के सहयोग से कक्षायें संचालित की गईं।

निर्वाणोत्सव पर श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का भी आयोजन किया गया। शिविर के आयोजनकर्त्ता श्री पारसदासजी खण्डेलवाल रामपुर थे। विधान के समस्त कार्यक्रम बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री एवं पण्डित संजयजी शास्त्री के सहयोग से मंगलार्थियों ने सम्पन्न कराये। शिविर में पंचकल्याणक की झाँकियों का प्रदर्शन किया गया साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

इन्दौर नगर में अपूर्व धर्म प्रभावना

इन्दौर : यहाँ ढाई द्वीप जिनायतन शिलान्यास के पूर्व दिनांक 31 अक्टूबर एवं 1 नवम्बर को दो दिनों में इन्दौर के विविध उपनगरों में देश के शिरोधार्य विद्वानों द्वारा 13 प्रवचनों के माध्यम से अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

यहाँ अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन आदि के प्रवचन हुये।

प्रवचनों के कार्यक्रम श्री मारवाडी मंदिर शक्कर बाजार, श्री महावीर मंदिर राजमोहल्ला, जैन मंदिर नेमिनगर कॉलोनी, श्री महावीर मंदिर गांधीनगर, श्री आदिनाथ जिन मंदिर रामचन्द्र नगर आदि स्थानों पर हुये।

ज्ञातव्य है कि समाज के विशेष आग्रह पर दिनांक 3 नवम्बर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का एक विशेष मार्मिक प्रवचन श्री दिग. जैन पंच बालयती मंदिर साधनानगर में हुआ।

दीपावली पर विशेष प्रवचन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 नवम्बर को भगवान महावीरस्वामी के निर्वाणोपलक्ष में प्रात: सामूहिक पूजन के उपरान्त निर्वाण लाडू चढाया गया। तदुपरान्त समग्र बापूनगर जैन समाज सहित जयपुर के विविध उपनगरों से पधारे साधर्मियों की आशातीत उपस्थिति में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के इस अवसर पर प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला। इस प्रसंग पर समागत श्रोताओं को डॉ.भारिल्ल द्वारा लिखित रक्षा बन्धन और दीपावली नामक पुस्तक वितरित की गई।

तदुपरान्त श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथी बड़ा मंदिर में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने भी दीपावली से जुड़ी अनेक रीतियों पर तर्क-संगत विवेचन प्रस्तुत किया।

अहिंसा पर्व पर 97 बच्चे पुरस्कृत

उदयपुर (राज.) : यहाँ मुखर्जी चौक स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जिन चैत्यालय मुमुक्षु मंडल में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश के निर्देशानुसार उदयपुर फैडरेशन द्वारा पटाखे न छोड़नेवाले बच्चों को समारोहपूर्वक सम्मानित किया गया।

मुमुक्षु मंडल फैडरेशन के शाखाध्यक्ष सुरेश भोरावत ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र जयेश जैन ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नारायण सेवा संस्थान के सचिव प्रशांत अग्रवाल थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नेमीचंद चम्पालाल भोरावत चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष राजेन्द्र भोरावत थे। विशिष्ट अतिथि फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्रजी शास्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीर प्रसाद जैन, नृपेन्द्र जैन एवं प्रक्षाल जैन थे।

समारोह में पटाखे न फोडनेवाले 2 वर्ष से 16 वर्ष तक के 97 बच्चों को प्रशस्ती पत्र एवं गिफ्ट हेम्पर दिये गये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री ने किया।

गणधर वलय विधान आयोजित

अजमेर (राज.) : श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, अजमेर के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन सीमन्धर जिनालय, पुरानी मंडी, अजमेर प्रांगण में दिनांक 6 से 13 नवम्बर तक पर्व के अवसर पर श्री गणधरवलय ऋषिमंडल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विदुषी बहन श्रीमती पुष्पाजी जैन खंडवा के प्रात: नियमसार व रात्रि में प्रवचनसार ग्रंथ पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी शास्त्री के निर्देशन में श्री नवल दोशी, ममता गंगवाल एवं समता बड़जात्या के सहयोग से सम्पन्न हुये। ट्रस्टी श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया ने आमंत्रित विद्वत्वर्ग व श्रावक-श्राविकाओं का आभार व्यक्त किया।

यात्रा एवं मुक्तागिरी शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन **कोटा संभाग** द्वारा आयोजित तीर्थक्षेत्र यात्रा एवं मुक्तागिरी शिविर दिनांक 24 अक्टूबर से 30 अक्टूबर, 2008 तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

यात्रा हेतु स्लीपर बस की व्यवस्था की गई थी। इस यात्रा व शिविर में पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित जयकुमारजी बाँरा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा व ब्र. सत्येन्द्रजी भोपाल का मंगल सानिध्य एवं मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। यात्रा में 144 मुमुक्षु भाइयों ने भाग लिया। विशेष बात यह रही कि बस में भी माइक द्वारा पूजन-पाठ व प्रवचन निरन्तर चलते रहे।

यात्रा के दौरान क्रमश: भोपाल, भोजपुर, समसगढ़, नागपुर, रामटेक, कारंजा, भातकुली तीर्थक्षेत्रों की वंदना की गई। जहाँ पर भोजन व ठहरने की उत्तम व्यवस्था स्थानीय समिति द्वारा की गई तथा मुक्तागिरी में त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन रखा गया। जहाँ विनोदकुमारजी मलकापुर द्वारा भोजन व आवास की बहुत ही सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

सभी लोगों ने अति उत्साह से कार्यक्रमों के माध्यम से धर्म लाभ लिया तथा मुक्त कंठ से कोटा फैडरेशन की खूब सराहना की। **ह्न शिविर संयोजक - चेतन जैन**

सिद्धचक्र विधान हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

१. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक ६ नवम्बर से १३ नवम्बर, २००८ तक श्री प्रेमचंदजी एवं श्रीमती राजेशजी गुरहा परिवार, रायपुर (छत्तीसगढ़) की ओर से श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य-नियम पूजन के उपरान्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विधान की जयमाला पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विभिन्न विद्वानों के माध्यम से कक्षाओं का लाभ मिला। सायं को जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् छात्र प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विधान के समस्त कार्यक्रम शुद्ध आम्नायानुसार पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से सम्पन्न कराये।

2. ग्वालियर (म. प्र.) : यहाँ अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर मुमुक्षु मंडल द्वारा श्री बाबूलालजी महावीरप्रसादजी की ओर से श्री सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ। उद्घाटन पूरणचंदजी सर्राफ मुरार ने किया।

विधान के समस्त कार्य पण्डित मधुकरजी जलगाँव व पण्डित कांतिजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये। इस प्रसंग पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित लालजीरामजी विदिशा एवं स्थानीय पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित सुनीलजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी, पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री, पण्डित पवनजी शास्त्री एवं पण्डित संभवजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में श्रीमती चेतना जैन एवं श्रीमती मंजू जैन ने कार्यक्रम कराये। **ह्न महेश जैन**

राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : अष्टान्हिका पर्व के दौरान दिनांक ७ से ११ नवम्बर, ०८ तक **जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर पंचदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें अनेक विद्वानों ने विचार प्रस्तुत किये।

दिनांक ७ नवम्बर को आयोजित प्रथम सत्र की अध्यक्षता उदयपुर (राज.) से पधारे डॉ. उदयचंद जैन, ८ नवम्बर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शिवसागर त्रिपाठी जयपुर, ९ नवम्बर को तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल अमलाई, १० नवम्बर को चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. गंगाराम गर्ग भरतपुर तथा ११ नवम्बर को पंचम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

संगोष्ठी में डॉ. नेमचंदजी जैन श्री महावीरजी ने **सत्य की खोज का साहित्यिक सत्य,** डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन ने **शिक्षा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में डॉ.भारिल्ल का दर्शन,** डॉ. श्रीयांसजी सिंघई ने **डॉ. भारिल्ल और जैन अध्यात्म,** डॉ. संजयजी जैन दौसा ने **क्रमबद्धपर्याय के परिप्रेक्ष्य में डॉ. भारिल्ल की निबन्ध कला** , पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने **सत्य की खोज की ओपन्यासिक तत्त्वों के आधार पर समीक्षा** विषय पर तथा डॉ. बी. एल. सेठी झुंझुनू, डॉ. कमलेशजी जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन अखिलजी बंसल ने तथा आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व जयपुर में आयोजित शिक्षण-शिविर के अवसर पर संगोष्ठी का प्रथम चरण आयोजित किया गया था, जिसमें १३ विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत कर संगोष्ठी को सार्थकता प्रदान की।

शिशु आँगनवाड़ी केन्द्र का उद्घाटन

उदयपुर : अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा मुमुक्षु मंडल के तत्त्वावधान में चंद्रप्रभ दि. जैन चैत्यालय में जैन शिशु आँगनवाड़ी केन्द्र का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। श्री सुरेश भोरावत ने बताया कि फैडरेशन द्वारा भारतवर्ष में सिर्फ उदयपुर में ही सर्वप्रथम यह प्रारम्भ की जा रही है। जिसमें दो वर्ष से पाँच वर्ष तक के बच्चों को नि:शुल्क धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का ज्ञान दिया जायेगा।

उद्घाटन भाजपा शहर जिलाध्यक्ष ताराचंद जैन ने किया। मुख्यअतिथि डॉ. उदयचंद जैन थे। अध्यक्षता फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्र शास्त्री ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ. महावीरप्रसाद जैन, राजमल गोदड़ोत, हीरालाल अखावत, हेमन्त जैन, खेमचंद जैन, दीपचंद गाँधी थे। संचालन डॉ. नीलम जैन ने किया।

पाठशाला में आँगनबाड़ी

पाठशाला संचालकों को सूचित कर रहे हैं कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित वी.वि.पाठशाला के पाठ्यक्रम में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा लिखित जैन नर्सरी, जैन के.जी., जैन जी.के. आदि बाल पुस्तकें भी शामिल कर ली गई हैं। **ह्न प्रबंधक, पाठशाला समिति**

मुक्त विद्यापीठ ह्न

विशारद द्वितीयवर्ष के छात्रों हेतु...

1. जिन छात्रों ने इस वर्ष (2008-09) की रजिस्ट्रेशन फीस न भेजी हो वे तुरंत भेजें।

2. इस वर्ष के कोर्स में निम्न पुस्तके हैं ह्न 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1, 2. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2, 3. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, 4. धर्म के दशलक्षण (डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल)+ भक्तामर प्रवचन।

3. जिनके पास पुस्तकें न पहुँची हो, वे 50/- का मनी ऑर्डर भेजकर मंगा सकते हैं।

4. फाइनल एग्जाम मार्च माह के अंतिम सप्ताह में होंगे।

पेपर का प्रारूप इसप्रकार होगा ह्न

पाँच परिभाषात्मक प्रश्न, तीन भेद-प्रभेदात्मक प्रश्न, दस अति लघुत्तरात्मक प्रश्न, पाँच लघुत्तरात्मक प्रश्न, तीन दीर्घोत्तरात्मक प्रश्न एवं एक निबंधात्मक प्रश्न ।

परीक्षा/अध्ययन हेतु निर्देश ह्न

1. तत्त्वज्ञान पाठमाला के पद्यात्मक पाठों से छन्दपूर्ति व छन्दों का सामान्यार्थ पूछा जायेगा।

2. तत्त्वज्ञान पाठमाला में आये हुये महापुरुषों, आचार्यों का जीवन परिचय अवश्य पढें।

3. लघु जैन सिद्धा. प्रवेशिका में से प्रश्न क्रमांक 142 से 145 तक छोड़ कर अध्ययन करें।

4. भक्तामर स्तोत्र का अध्ययन करने हेतु भक्तामर प्रवचन पुस्तक पढ़ें, इसमें पुस्तक की प्रस्तावना का अध्ययन करें।

5. भक्तामर स्तोत्र में से श्लोकों का मात्र भावार्थ ही पूछा जायेगा।

शोक समाचार

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **हैदराबाद** निवासी नयन शाह के पिता**श्री महेन्द्रजी कल्याणभाई शाह** का दिनांक 4 नवम्बर,08 को यात्रा के दौरान सोनगढ़ से लौटते हुये राजकोट में देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 500/- रुपये प्राप्त हुये।

2. **जयपुर निवासी** पण्डित संतोषजी झांझरी के ज्येष्ठ भ्राता **श्री ताराचन्दजी झांझरी** का दिनांक 7 नवम्बर, 08 को 85 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप गहन तत्त्वाभ्यासी थे। विगत 60 वर्षों से प्रतिदिन प्रवचन सुनना आपकी दिनचर्या का अंग था।

3. **जयपुर निवासी** श्री माणकचन्दजी मुशरफ की सुपुत्री **श्रीमती जयलक्ष्मी रारा (आसाम)** का दिनांक 20 अक्टूबर को शांत परिणामों से निधन हो गया। आप तत्त्वरुचिवान महिला थीं। आपको तत्त्वचर्चा एवं स्वाध्याय की विशेष लगन थी। विगत एक माह से आपको लीवर में कैंसर था। अन्त समय में बहुत शांत परिणामों सहित सब कुछ त्यागकर आपने समाधिपूर्वक देह का त्याग किया। आपकी स्मृति में 200/- रुपये प्राप्त हुये ।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त हो ह्न ऐसी भावना है।

पूज्य श्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न पण्डित श्री बाबूभाई मेहता
दिगम्बर जैन सत्समागम पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट, धणप के अन्तर्गत

अध्यात्म साधना तीर्थ चैतन्य धाम में

श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(दिनांक 28 नवम्बर से दिनांक 3 दिसम्बर 2008 तक)

आपको यह बताते हुये अत्यंत हर्ष हो रहा है कि चैतन्य की चेतना को चेतनवंत रखने के धाम 'चैतन्यधाम' में शुक्रवार दिनांक 28 नवम्बर से बुधवार दिनांक 3 दिसम्बर 2008 तक श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होने जा रहा है।

महोत्सव में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी, पण्डित हेमंतभाई गाँधी, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी , पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित मधुकरजी जैन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री आदि शुद्धाम्नाय अनुसार सम्पन्न करायेंगे।

इस अवसर पर दीक्षा कल्याणक के दिन दिनांक 1 दिसम्बर को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पण्डित शैलेषभाई तलोदवालों का सम्मान समारोह आयोजित होगा।

इस मांगलिक अनुष्ठान में आप सभी को इष्ट-मित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमंत्रण है।

महोत्सव स्थल

'**चैतन्यधाम**', नेशनल हाईवे नं.8, पो. धणप, जिला-गांधीनगर। फोन-079-23272222

इन्द्राबेन जयन्तिभाई दोसी, मुम्बई का सहयोग

श्री टोडरमल स्मारक भवन में अक्टूबर माह में आयोजित शिविर के अवसर पर इन्द्राबेन जयन्तिभाई दोसी पधारी थीं। उन्होनें ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों को देखकर अत्यंत हर्ष व्यक्त किया एवं निम्नप्रकार से सहयोग प्रदान किया है; उनको हार्दिक धन्यवाद !

1. सुरेन्द्रनगर निवासी स्वर्गीय श्रीमती पोतीबेन धनजी भाई दोसी की स्मृति में हस्ते इन्द्राबेन जयन्तिभाई दोसी द्वारा ट्रस्ट के संरक्षक के रूप में 5 लाख रुपया एवं विद्यार्थी गुरुदेवश्री एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इत्यादि विद्वानों के प्रवचन बड़े पर्दे (स्क्रीन)पर स्पष्ट देख-सुन सकें; एतदर्थ एक टी. वी. प्रोजेक्टर के लिये 51 हजार रुपये सोत्साह प्रदान किये।